दो शब्द

2 दिसम्बर 2011 जल जागरुकता दिवस के अवसर पर पानी की महत्ता का यह काव्य रूप तैयार हुआ। हिन्दी व अंग्रेजी के विद्वान श्री पूरन मुद्गल, जिनका मैं विद्यार्थी रहा हूँ तथा संगीत मर्मज्ञ श्री महावीर मुकेश के आशीर्वाद से यह **'जल चालीसा'** आपके हाथ में है। विनम्र अनुरोध है कि छन्द तथा भाषा से अधिक आप मेरे भावों को महत्व दें। इसके प्रथम संस्करण का विमोचन हरियाणा के मुख्यमंत्री द्वारा 24 अप्रैल 2012 को किया गया। जल चालीसा का यह बारहवां संस्करण है, **जो श्रीमती तुलसी देवी एजुकेशनल सोसायटी (रजि.) अंबाला की ओर से श्रीमती रीटा मुंजाल के माध्यम से जल संरक्षण जागरुकता हेतु प्रकाशित कराया गया है ताकि देश व समाज की ज्वलंत समस्या 'जल की कमी' व उससे बचने के लिए संस्थान के विद्यार्थियों, उनके परिवारों के साथ-साथ क्षेत्र की जनता को सचेत कर सकें।** शिक्षण संस्थानों में जा-जाकर मेरे द्वारा 4 लाख से अधिक विद्यार्थियों व जनता को प्रत्यक्ष रूप से जागरुक किया गया है। टी.वी. चैनलों, दूरदर्शन केन्द्र हिसार तथा रेडियो स्टेशन एफएम 90.4 से पर्यावरण तथा जल ऊर्जा बचत पर वार्ता अनेक बार प्रसारित की गई है। दिल्ली से डीडी न्यूज, डीडी किसान चैनल व डीडी नेशनल पर प्रसारण किया गया है। अब तक लगभग

80 लाख लोग सन्देश पढ़, सुन व देख चुके हैं। जल संबंधित 3.5 लाख विज्ञप्तियां वितरित और 2'x3' के 1,500 से अधिक प्रेरक बैनर शिक्षा संस्थानों व सार्वजनिक स्थलों पर लगाए गए हैं। **'बिन पानी सब सून'** 6000 पुस्तकें भी प्रकाशित। विमोचन 8 मई 2010 को महामहिम राज्यपाल हरियाणा द्वारा किया गया। फेसबुक, लिंकड–इन व इ–मेल और ग्रुप शेयरिंग द्वारा 10 लाख से अधिक लोगों तक जल बचत संदेश व जल–चालीसा पहुंचा चुके हैं। Water Portal India (Hindi), yahoo, facebook, google, youtube.com/Jal Chalisa में भी जल चालीसा उपलब्ध है। अनेक पत्र–पत्रिकाओं ने भी यह जल चालीसा प्रकाशित किया है। इसके वीडियो का लोकार्पण उड़ीसा के महामहिम राज्यपाल प्रो. गणेशी लाल ने 2018 में किया था। जल कमी की भयंकरता के मध्य नजर **'जल चालीसा'** का मनन करते हुए जल व्यर्थ न करें। स्वयं जल व ऊर्जा बचाएं तथा दूसरों को प्रेरित करें। आप इसकी प्रतियां छपवाकर या प्रकाशित प्रतियां वितरित करना चाहें तो सम्पर्क करें। जल चालीसा टाइटल व मूल पाठ में परिवर्तन मान्य नहीं होगा।

रमेश गोयल मो. 09416049757 E-mail : rameshgoyalsrs@gmail.com

© सर्वाधिकार लेखक

बारहवां संस्करण सितंबर 2019–5,000 प्रति ग्यारहवां संस्करण तक 55,000 प्रति

जल चालीसा

जल मंदिर, जल देवता, जल पूजा जल ध्यान।
जीवन का पर्याय जल, सभी सुखों की खान॥
जल की महिमा क्या कहें, जाने सकल जहान।
बूंद–बूंद बहुमूल्य है, दें पूरा सम्मान॥

जय जलदेव सकल सुखदाता।
मात पिता भ्राता सम त्राता॥
सागर जल में विष्णु बिराजे।
शंभु शीश गंगा जल साजे॥

इन्द्र देव है जल बरसाता।
वरुणदेव जलपति कहलाता।।
रामायण की सरयू मैया।
कालिंदी का कृष्ण कन्हैया।।
गंगा यमुना नाम धरे जल।
जन्म-जन्म के पाप हरे जल।।
ऋषिकेष है, हरिद्वार है।
जल ही काशी मोक्ष द्वार है।।
राम नाम की मीठी बानी।
नदिया तट पर केवट जानी।।

माता भूमि पिता है पानी।
यही कह रही है गुरबानी।।
जन जन हेतु नीर ले आईं।
नदियां तब माता कहलाईं।।
सूर्य देव को अर्पण जल से।
पितरों का भी तर्पण जल से।।
चाहे हवन करें या पूजा।
पानी के सम और न दूजा।।
चाहे नभ हो, या हो जल-थल।
जीव-जन्तु की जान सदा जल।।

बूंद-बूंद से भरता गागर।
गागर से बन जाता सागर॥
नीर क्षीर मधु खिलता तन-मन।
नीर बिना नीरस है जीवन॥
नदी सरोवर जब भर जाए।
लहरे खेती मन हरषाए॥
तीन भाग जल काया भीतर।
फिर भी चाहिए पानी दिन भर॥
तीरथ व्रत निष्फल हो जाएं।
समुचित जल जब हम ना पाएं॥

जल बिन कैसे बने रसोई।
भोजन कैसे खाये कोई।।
नदियों में जब ना होगा जल।
खाली होंगे सब के ही नल।।
घटता भू जल सूखी नदिया।
जाने तो अच्छी हो दुनिया।।
पाइप से हम फर्श न धोएं।
गाड़ी पर हम जल ना खोएं।।
टूंटी कभी न खुल्ली छोड़ें।
व्यर्थ बहे तो झटपट दौड़ें।।

बिन मतलब छिड़काव करें ना।
जल का व्यर्थ बहाव करें ना।।
जल की सोचें, कल की सोचें।
जीवन के पल-पल की सोचें।।
बड़ी भूल है भूजल दोहन।
यही बताता है भूकम्पन।।
कम वर्षा है अति तड़पाती।
बिन पानी खेती जल जाती।।
वर्षा जल एकत्र करेंगे।
इसी बात का ध्यान धरेंगे।।

बर्तन मांजें वस्त्र खंगालें।
उस जल को बेकार न डालें॥
पौधे सींचें आगन धो लें।
कण-कण में जीवन रस घोलें॥
जीवन जीवाधार सदा जल।
कुदरत का उपहार सदा जल॥
धन संचय तो करते हैं सब।
जल-संचय भी हम कर लें अब॥
हम सब मिल संकल्प करेंगे।
पानी कभी न नष्ट करेंगे॥

सोचें जल बर्बादी का हल।
ताकि न आए संकट का कल॥
सुन लें जरा नदी की कल कल।
उसमें कभी नहीं डालें मल॥
जीवन का अनमोल रतन जल।
जैसे बचे बचाएं हर पल॥
जल से जीवन, जीवन ही जल।
समझें जब यह तभी बचे जल॥
हरे-भरे हम पेड़ लगाएं।
उमड़-उमड़ घन बरखा लाएं॥

पेड़ों के बिन मेघ ना बरसें।
लगें पेड़ तो फिर क्यों तरसें॥
हम सुधरेंगे जग सुधरेगा।
बूंद-बूंद से घड़ा भरेगा॥
जन-जन हमें जगाना होगा।
जल सब तरह बचाना होगा॥

कूएं नदियां बावड़ी, जब लौं जल भरपूर।
तब लौं जीवन सुख भरा, बरसे चहुं दिस नूर॥
जल बचाव अभियान की, मन में लिए उमंग।
आओ सब मिलकर चलें, **'रमेश गोयल'** संग॥

पर्यावरण एक विस्तृत विषय

पर्यावरण एक विस्तृत विषय है और इसके अन्तर्गत पौधारोपण व वृक्ष रक्षण, प्रदूषण (जल, वायु, ध्वनि आदि) की रोकथाम, जल संरक्षण यानी जल बर्बाद न करें, कम से कम प्रयोग करें और वर्षा जल संग्रहण पर ध्यान दें। वाटर हारवैस्टिंग (वर्षा जल संग्रहण) व कृषि सिंचाई में फव्वारा पद्धति को प्राथमिकता दें। जल प्रदूषण रोकना यानी नदी, तालाब, झील व अन्य जल स्रोतों में कचरा व गन्दगी न डालें। किसी भी प्रकार से पानी गंदा न करें।

वायु प्रदूषण रोकना यानी धुआं न करें, वायु में जहरीली गैस आदि न जाये तथा बदबू न फैलाएं। पटाखा (जो ध्वनि व वायु प्रदूषण दोनों फैलाते हैं) का प्रयोग न करें। पटाखा से कितने भयावह अग्निकांड होते हैं और हजारों लोग असामयिक मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं तथा करोड़ो अरबों रुपयों की अपूर्णनीय क्षति हो जाती है।

ऊर्जा बचत अर्थात बिजली बेकार न जलायें, छोटे बल्ब एलईडी प्रयोग करें, सौर ऊर्जा का प्रयोग बढ़ायें। सौर ऊर्जा उपकरणों पर सरकारी सब्सिडी भी बहुत मिलती है।

स्वच्छता से प्रदूषण घटता है। अधिक से अधिक साफ सफाई रखें। स्वच्छता से मच्छर कम उत्पन्न होगा जिससे बीमारियां घटेंगी और स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्वस्थ रहने से दवाई व चिकित्सीय खर्च बचेगा और कार्य क्षमता बढ़ेगी। मन प्रफुल्लित रहेगा जिससे कार्य की गुणवत्ता बढ़ेगी। इसके लिए हमें केवल एक संकल्प करना है कि खुल्ले में कूड़ा-कचरा कभी भी नहीं डालेंगे बल्कि

कूड़ादान व निर्धारित स्थान पर ही डालेंगे।

प्लास्टिक स्वास्थ्य व पर्यावरण दोनों के लिए घातक है। एक बार भी प्रयोग होने वाले प्लास्टिक उत्पाद (थैली, गिलास, प्लेट, बोतल, कप आदि) का प्रयोग बिल्कुल न करें। खाने-पीने के सामान में प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने में सहयोग करें।

कागज पेड़ के गुद्दे से बनता है इसलिए कागज का कम से कम प्रयोग करें। कागज के दोनों ओर लिखें तथा टाईप करें व प्रिंट करें। लकड़ी से बनी वस्तुओं का भी कम से कम प्रयोग करें।

अनाज, सब्जियां व अन्य खाद्य पदार्थों को तैयार होने में कई महीनों का समय, श्रम, धन, ऊर्जा, जल आदि की खपत होती है। भोजन बर्बाद न करें। कई देशों में भोजन सहित प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद करने पर जुर्माना व सजा का प्रावधान है। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करें।

इतना ही लें थाली में। व्यर्थ न जाये नाली में।।

पर्यावरण प्रेरणा-पौधारोपण व वृक्ष रक्षण, जल व ऊर्जा संरक्षण, प्रदूषण रोकथाम व स्वच्छता के निमित्त 2007 में स्थापित राष्ट्रीय संस्था है जिसकी अनेक प्रांतों में शाखाएं व प्रांतीय इकाई कार्यरत हैं। आप भी हमारे साथ जुड़ कर समाज व राष्ट्र हित में कुछ करना चाहते हैं तो पर्यावरण प्रेरणा के सदस्य बनें।

सम्पर्क-9416049757, e-mail : paryavaranprena@gmail.com

क्यों है जल की कमी?

आधुनिकरण की ओर अग्रसर सभ्यता व बढ़ती जनसंख्या के कारण जंगल कम होते जा रहे हैं। मशीनीकरण से प्रदूषण व तापमान बढ़ रहा है। परिणाम स्वरूप जलवायु परिवर्तन हो रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा कम हो रही है जिससे नदियों में जल घटता जा रहा है। फिर भी नदियों में कूड़ा–कर्कट, गन्दगी व जहरीला कचरा डाला जा रहा है। जल आपूर्ति के लिए नलकूपों द्वारा अधिक भू–जल दोहन के कारण भू–जल स्तर गिरता जा रहा है। प्रतिदिन आने वाले भूकम्प के कारणों में अति भूजल दोहन भी एक कारण है। देश के 5723 जल ब्लॉक में से 50% से अधिक डार्क जोन में जा चुके हैं और शेष तेजी से डार्क जोन में होते जा रहे हैं। भारत सहित पूरे विश्व में घोर पेय जल संकट उत्पन्न हो रहा है और प्राणी का जीवन खतरे में पड़ रहा है। पानी बर्बाद न करने का संकल्प करें। वर्षा जल संग्रहण, वाटर हारवैस्टिंग व रिचार्जर के द्वारा पानी की कमी को कुछ कम किया जा सकता है। खेती में फव्वारा सिंचाई पद्धति का प्रयोग करें तथा अधिक पानी खपत वाली ऊपज धान व गन्ना के बजाय तैलीय व दलहन की खेती करें। आओ हम सब मिलकर सुरक्षित भविष्य के लिए इस दिशा में संकल्प और प्रयास करें।

–रमेश गोयल

हरियाणा जल स्टार अवार्ड, डायमंड ऑफ इंडिया अवार्ड, सोशल जस्टिस बेस्ट मैन अवार्ड , जेम ऑफ इंडिया अवार्ड, चित्रगुप्त सम्मान-2017, राष्ट्ररतन अवार्ड, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राष्ट्र निर्माण अवार्ड, आउट स्टैंडिंग अवार्ड, जल योद्धा सम्मान 2018, अग्ररतन सम्मान-2018, सिरसा गौरव सम्मान-2019 से सम्मानित

नाम : रमेश गोयल ● **जन्म :** सिरसा 23 अक्टूबर 1948 ● **शिक्षा :** कला, वाणिज्य व विधि स्नातक

व्यवसाय : आयकर, जीएसटी, ट्रस्ट व सोसायटीज सलाहकार।

व्यवसायिक : 49 वर्ष से आयकर व्यवसायी, अपील विशेषज्ञ। आयकर बार एसोसिएशन सिरसा के संस्थापक, सचिव। कई बार सचिव व अध्यक्ष रहे। ऑल इंडिया फैडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टीशनर्ज मुंबई के आजीवन सदस्य व नैशनल बार एसोशिएशन ऑफ इंडिया, दिल्ली के जिलाध्यक्ष हैं। अप्रैल 2011 से दिल्ली में भी कार्यालय है।

सामाजिक : हरियाणा तरुण संघ सिरसा के उप प्रधान (1968-70) व प्रधान (1970-78) रहे। नगर में नेताजी सुभाष बोस की प्रतिमा (1968-69) लगाने में अहम भूमिका। ह.प्रा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन के शाखा कोषाध्यक्ष, सचिव, प्रधान व 4 वर्ष प्रान्तीय संयुक्त मंत्री रहे तथा 1983 से प्रान्तीय उपाध्यक्ष हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद की सिरसा शाखा के संस्थापक अध्यक्ष, 3 वर्ष प्रान्तीय उपाध्याक्ष व 2 वर्ष अध्यक्ष रहे। 2006-2007 से केन्द्रीय टीम में हैं। 2013-14 व 2014-15 में राष्ट्रीय संयोजक (पर्यावरण), 2015-16/2018-19 में राष्ट्रीय मंत्री पर्यावरण रहे। अब राष्ट्रीय सेवा समिति सदस्य

हैं। अग्रोहा मेडिकल कॉलेज के आजीवन सदस्य हैं व 3 वर्ष कार्यकारिणी सदस्य रहे तथा स्थानीय, प्रादेशिक व राष्ट्र स्तरीय विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के आजीवन सदस्य व पदाधिकारी हैं।

लेखन : कविता, लघुकथा, यात्रा संस्मरण, लेख आदि राष्ट्रीय स्तर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

विशेष: हरियाणा के अकेले वरिष्ठ नागरिक, जिन्होंने जल संरक्षण को एक मिशन के रूप में लिया हुआ है और इस एकाकी प्रयास, लग्न व मिशनरी कार्य के कारण दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह ने 'हरियाणा राज्य जल स्टार अवार्ड 2011' से सम्मानित किया। जिला प्रशासन व ह.प्रा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा अगस्त/सितम्बर 2011 में जल संरक्षण के लिए सम्मानित किया गया। दिसम्बर 2011 में केन्द्र भू-जल बोर्ड की सात सदस्यीय जिला सलाहकार कमेटी का गैर सरकारी सदस्य मनोनीत किया गया। अन्य कई संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित।

प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हरियाणा द्वारा 14 सितंबर 2019 को राज्य स्तर पर ''हिन्दी सेवी'' सम्मान दिया गया।

पर्यायवरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय हरियाणा सरकार द्वारा अगस्त 2019 में गठित टेक्नीकल कमेटी में सदस्य मनोनीत।

20, आर.एस.डी. कॉलोनी, सिरसा-125 055 (हरियाणा)

दूरभाष : 01666-221757 फैक्स: 01666-221757 मो. 09416049757

दिल्ली कार्यालय-जी-114, ग्राउण्ड फ्लोर, फेस-1, अशोक विहार, दिल्ली-110052

e-mail : rameshgoyalsrs@gmail.com
e-mail : rameshgoyalsrs@rediffmail.com
www.facebook.com/ rameshgoyal.52
facebook.com / rameshgoyalsrs